MAKHANLAL CHATURVEDI NATIONAL UNIVERSITY OF JOURNALISM AND COMMUNICATION

// UNIVERSITY LIBRARY //

-: NEWS CLIPPING SERVICE -:

DATE :- 22 AUGUST, 2025

MCU NEWS

स्वदेश ज्योति

यह लेखक के निजी विचार हैं

NEWS CLIPPING SERVICE
FROM MCNUJC LIBRARY

माखनलालजी का समाचारपत्र 'कर्मवीर' बना अनूठा शिलालेख

लोकेन्द्र सिंह
समीक्षक, माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय में सहायक प्राध्यापक

स्मारक, भवन, परिसर इत्यादि के भूमिपूजन या उद्घाटन प्रसंग पर पत्थर लगाने (शिलालेख) की परंपरा का निर्वहन किया जाता है। यह इस बात का दस्तावेज होता है कि वास्तु का भूमिपूजन/ उद्घाटन / लोकार्पण कब और किसके द्वारा सम्पन्न किया गया। ये शिलालेख एक प्रकार से इतिहास और महत्वपूर्ण घटनाओं के विवरण को समझने में सहायता करते हैं। इन शिलालेखों का एक तयशुदा प्रारूप है, हम सबने देखे ही हैं। किंतु, माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, भोपाल के नवीन परिसर में स्वतंत्रतासेनानी एवं प्रखर संपादक पंडित माखनलाल चतुर्वेदी की प्रतिमा अनावरण के प्रसंग पर लगाया गया शिलालेख अनूठा है और अपने आप में अद्भुत है। मुझे विश्वास है कि ऐसा शिलालेख आपने पहले नहीं देखा होगा। माखनलालजी की प्रतिमा के 'पेडस्टल' पर आपको समाचारपत्र का प्रथम पृष्ठ चस्पा दिखायी देगा। दरअसल, समाचारपत्र का यह 'फ्रंट पेज' ही दादा माखनलाल चतुर्वेदी की इस प्रतिमा का 'शिलालेख' है। यह रचनात्मक और अभिनव शिलालेख अपने सृजनात्मक लेखन के लिए पहचाने जाने वाले विश्वविद्यालय के कुलगुरु श्री विजय मनोहर तिवारी की सुंदर कल्पना है। अगर आप माखनलालजी की प्रतिमा के समीप आ रहे हैं, तो यह शिलालेख आपको विश्वविद्यालय की 35 वर्ष की यात्रा, उसकी उपलब्धियों और भविष्य के स्वप्नों से भेंट करा देगा।

प्रतिमा दादा माखनलाल चतुर्वेदी की है, इसलिए उनके ही समाचारपत्र 'कर्मवीर' को शिलालेख बनाया गया है। हम सब जानते हैं कि माखनलालजी और कर्मवीर एक-दूसरे के पर्याय हैं। इस शिलालेख पर क्रांतिकारी समाचार पत्र 'कर्मवीर' का पंजीयन क्रमांक- एन.338 भी अंकित है। दादा माखनलाल चतुर्वेदी जब कर्मवीर के प्रकाशन के लिए अनुमति पत्र प्राप्त करने ब्रिटिश शासन के अधिकारी के पास गए थे, उसका रोचक किस्सा है। उस किस्से को आप पढ़िए। वह किस्सा बताता है कि दादा माखनलाल चतुर्वेदी और कर्मवीर की पत्रकारिता के तेवर क्या रहे होंगे। इस शिलालेख पर वह सब विवरण बहुत ही रोचक अंदाज में दर्ज है, जो सामान्य शिलालेखों पर दर्ज रहता है। प्रतिमा का अनावरण कब हुआ? इस प्रश्न का उत्तर आपको

समाचारपत्र की 'फोलिया लाइन' में मिलेगा, जिसमें अंकित है- 'बिशनखेड़ी, भोपाल। भाद्रपद, कृष्ण पक्ष, द्वादशी सम्वत 2082 । बुधवार, 20 अगस्त, 2025'। आठ कॉलम में फैली 'टॉप बॉक्स न्यूज' में आपको पता चलेगा कि प्रतिमा का अनावरण विश्वविद्यालय की महापरिषद के माननीय अध्यक्ष एवं मध्यप्रदेश के यशस्वी मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव, प्रसिद्ध कवि डॉ. कुमार विश्वास और कुलगुरु श्री विजय मनोहर तिवारी के द्वारा किया गया। इनके अतिरिक्त स्थानीय विधायक श्री भगवानदास सबनानी, आयुक्त जनसंपर्क डॉ. सुदाम खाड़े, इंदौर लिटरेचर फेस्टीवल के सूत्रधार श्री प्रवीण शर्मा, शब्दवेत्ता श्री अजीत वडनेरकर, वानिकी विशेषज्ञ डॉ. सुदेश वाघमारे सहित अन्य गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे। यह लीड न्यूज स्वयं कुलगुरु श्री विजय मनोहर तिवारी ने ही लिखी है।

शिलालेख पर प्रतिमा की विशेषताएं भी दर्ज है। जैसे- बहुधातु से निर्मित दादा माखनलाल चतुर्वेदी की यह प्रतिमा 12 फीट ऊंची और 11 सौ किलोग्राम वजनी है। इतना ही नहीं, यह शिलालेख विश्वविद्यालय की 35 वर्ष की गौरवशाली परंपरा से भी परिचय कराता है। साथ ही, पंडित माखनलाल चतुर्वेदी के उस 'विचार बीज' का स्मरण भी कराता है, जो विश्वविद्यालय की नींव में है। दक्ष पत्रकारों के निर्माण के लिए एक विद्यापीठ की मूल कल्पना माखनलालजी ने ही की थी, जो 1990 में जाकर माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय के रूप में साकार हुई। भोपाल में त्रिलंगा स्थित छोटे-से भवन से शुरू हुई यह यात्रा महाराण प्रताप नगर में स्थित विकास भवन से होकर दो वर्ष पूर्व ही बिशनखेड़ी स्थित 50 एकड़ के परिसर में पहुंच गई है। यह शिलालेख बताता है कि विश्वविद्यालय से दीक्षित होकर निकले विद्यार्थी देश के प्रत्येक मीडिया संस्थान में चमक रहे हैं। पत्रकारिता विभाग से शुरू हुए विश्वविद्यालय में आज 10 शैक्षणिक विभाग हैं। प्रत्येक विभाग की यात्रा और उनके मील के पत्थरों की कहानी भी यह शिलालेख कहता है।

एक और विशेष बात है कि जिस 'पेडस्टल' दादा माखनलाल चतुर्वेदी सुशोभित हैं, उसके चारों और महान विचारों को स्थान दिया गया है। एक वक्तव्य- 'जन्मभूमि का सम्मान', महात्मा गांधीजी का है, जिसमें वह बता रहे हैं कि माखनलालजी के जन्मस्थान 'बाबई' (अब माखननगर) क्यों जा रहे हैं? गांधीजी कहते हैं कि जिस भूमि ने माखनलालजी को जन्म दिया, उसी भूमि को मैं सम्मान देना चाहता हूँ। दूसरा वक्तव्य- एक कविता 'जियो सदा माई के लाल' के रूप में राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त का है। यह कविता उन्होंने माखनलालजी के जन्मदिन के प्रसंग पर लिखी थीं। तीसरा वक्तव्य- 'लिखना माखनलालजी से सीखा' फिराक गोरखपुरी का है, जिसमें वह कह रहे हैं- 'उनके लेखों को पढ़ते समय ऐसा मालूम होता था कि आदि-शक्ति शब्दों के रूप में अवतरित हो रही है या गंगा स्वर्ग से उतर रही है'।

निःसंदेह, यह अनूठा शिलालेख माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्याल को एक अलग पहचान देगा। यह विद्यार्थियों को भी कल्पनाशील एवं सृजनशील होने के लिए प्रोत्साहित करेगा। यह रचनाधर्मिता ही पत्रकारिता का गुणधर्म है। यही अर्जित करने के लिए हम सब देश के अलग-अलग हिस्सों से यहां एकत्र आए हैं।

स्वदेश ज्योति

NEWS CLIPPING SERVICE
FROM MCNUJC LIBRARY

एमसीयू सत्रारंभ कार्यक्रम अभ्युदय का दूसरा दिन

एआई से मीडिया में प्रतिस्पर्द्धा बढ़ेगी, लेकिन गुणवत्ता में आएगा निखार : यशवंत व्यास

एमसीयू के सत्रारंभ कार्यक्रम अभ्युदय के दूसरे दिन विषय विशेषज्ञों ने रखे विचार

स्वदेश ज्योति संवाददाता, भोपाल

एआई एक अच्छा साथी या सेवक हो सकता है। इसका मुकाबला ईमानदारी जैसे गुणों से किया जा सकता है। एआई से घबराने की कोई जरूरत नहीं। प्रिंट मीडिया को एआई से बहुत फायदा होगा। एआई के इस दौर में हाइपर लोकल दुनिया बहुत महत्वपूर्ण है, इससे भविष्य में प्रिंट मीडिया में फील्ड रिपोर्टिंग के जॉब्स बढ़ेंगे। यह बात एमसीयू के सत्रारंभ कार्यक्रम अभ्युदय के दूसरे दिन के पहले सत्र में वरिष्ठ पत्रकार और लेखक यशवंत व्यास ने कही। वे बतौर मुख्य वक्ता एआई के दौर में प्रिंट मीडिया विषय पर व्याख्यान दे रहे थे। एमसीयू के सत्रारंभ कार्यक्रम के दूसरे दिन गुरूवार को विभिन्न सत्रों में वरिष्ठ पत्रकार यशवंत व्यास, वरिष्ठ रेडियो उद्घोषक कमल शर्मा, जनसम्पर्क विशेषज्ञ डॉ. समीर कपूर, संस्कृतिधर्मी डॉ. सच्चिदानंद जोशी, पद्मश्री विजयदत्त श्रीधर एवं वरिष्ठ पत्रकार एवं उद्घोषक विनय उपाध्याय के व्याख्यान हुए। इस अवसर पर स्वागत भाषण में कुलगुरू विजय मनोहर तिवारी ने कहा कि पत्रकारिता खासकर प्रिंट मीडिया की पत्रकारिता बहुत विशिष्ट रही है।

भाषा के लिए हमारी निर्भरता तकनीक पर बढ़ना बहुत अच्छा नहीं : विजयदत्त श्रीधर

एक अन्य सत्र में पत्रकारिता साहित्य एवं संस्कृति विषय पर पद्मश्री विजयदत्त श्रीधर ने कहा कि भाषा के लिए हमारी निर्भरता तकनीक पर बढ़ना बहुत अच्छा नहीं है। पत्रकारिता में लोकमंगल की भावना को महत्वपूर्ण बताते हुए उन्होंने कहा कि भाषा पत्रकार का प्रमुख औजार है इसलिए मीडिया के लोगों में भाषा की अच्छी समझ आवश्यक है। इसके बाद इसी विषय पर इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नई दिल्ली के सचिव डॉ. सच्चिदानंद जोशी ने कहा कि एक भारतीय बतौर हमारी पहली पहचान हमारी संस्कृति है।

संसार में भाषा के आने से पूर्व भी ध्वनियां मौजूद थीं : विनय उपाध्याय

इसी सत्र में संवाद कौशल पर वरिष्ठ पत्रकार और कला समीक्षक विनय उपाध्याय ने कहा कि संसार में भाषा के आने से पूर्व भी ध्वनियां मौजूद थीं। यही ध्वनि भाषा की मातृभूमि हैं और शब्द उसकी पृष्ठभूमि। ज्ञान परंपरा का निर्माण वाचिक और शब्द जैसे अलग-अलग माध्यमों से हुआ है। शब्द के पास वाचिक शक्ति होती है। उन्होंने कहा कि शब्द हमारी स्मृति में ठहर जाते हैं। इसलिए अच्छा संवाद करने के लिए अच्छे शब्द हमारे पास होना जरूरी है। इसके लिए अच्छा पढना और सुनना बहुत आवश्यक है।

मशीनें या तकनीक मानव का मुकाबला नहीं कर सकतीं : यशवंत व्यास

प्रारंभिक सत्र में बोलते हुए यशवंत व्यास ने कहा कि आधुनिक तकनीक और मानव सभ्यता के विकास में इंटेलिजेंस कोसेंट, फिजिकल कोसेंट, इमोशनल कोसेंट और स्प्रिचुअल कोसेंट जैसे मानवीय गुणों के संदर्भों में कहा कि मशीनें या तकनीक मानव का मुकाबला नहीं कर सकतीं। यह बात जरूर है कि हमारे कई कामों जैसे कि श्रम वाले क्षेत्रों में तकनीक का दखल बढ़ा है। बहुत हद तक आईक्यू आधारित काम में भी इसका समावेश बढ़ रहा है। लेकिन अभी भी मानवीय गुण बहुत बुनियादी हैं और एआई जैसी तकनीकें इसका मुकाबला नहीं कर सकती हैं। प्रिंट मीडिया में इन्हीं मानवीय गुणों जैसी प्रीमियम वैल्यू पैदा करनी होगी। सूचनाओं की दुनिया में मीडिया को विश्वसनीयता को बढ़ाना होगा। व्यास ने एमसीयू में पत्रकारिता के इतिहास पर केंद्रित प्रतिष्ठित समाचार पत्रों के ऐतिहासिक घटनाओं के कवरेज के प्रथम पन्नों की गैलरी की प्रशंसा भी की।

शब्द बम का काम भी करते हैं और मरहम का भी : कमल शर्मा

प्रख्यात रेडियो उद्घोषक कमल शर्मा ने कहा कि शब्द बम का काम भी करते हैं और मरहम का भी। अच्छा बोलना चाहते हैं तो अच्छा सुनना सीखिये। शब्द उदास भी करते हैं और शब्दों में वह ताकत भी होती है जो खुशी से भर दे। शब्द ब्रम्ह भी है जिसकी हम प्राण प्रतिष्ठा करते हैं। अच्छी भाषा के साथ अच्छा बोलने का संस्कार ही उद्घोषक को सफल बनाते हैं। उन्होंने कहा कि शब्द की प्राण प्रतिष्ठा वाणी से ही होती है और वह प्रभावशाली हो जाता है।

व्याख्यान | एमसीयू में सत्रारंभ कार्यक्रम 'अभ्युदय' का दूसरा दिन

एआइ से प्रतिस्पर्धा बढ़ेगी, पर गुणवत्ता में आएगा निखार

पत्रिका plus रिपोर्टर
patrika.com

भोपाल. एआई एक अच्छा साथी या सेवक हो सकता है। इसका मुकाबला ईमानदारी जैसे गुणों से किया जा सकता है। एआई से घबराने की कोई जरूरत नहीं। प्रिंट मीडिया को एआई से बहुत फायदा होगा। एआइ के इस दौर में हाइपर लोकल दुनिया बहुत महत्वपूर्ण है, इससे भविष्य में प्रिंट मीडिया में फील्ड रिपोर्टिंग के जॉब्स बढ़ेंगे। उक्त बातें एमसीयू के सत्रारंभ कार्यक्रम 'अभ्युदय' के दूसरे दिन के पहले सत्र में वरिष्ठ पत्रकार और लेखक यशवंत व्यास ने कहीं। वे बतौर मुख्य वक्ता 'एआइ के दौर में प्रिंट मीडिया' विषय पर व्याख्यान दे रहे थे। एमसीयू के सत्रारंभ कार्यक्रम के दूसरे दिन गुरुवार को विभिन्न सत्रों में वरिष्ठ रेडियो उद्घोषक कमल शर्मा, जनसम्पर्क विशेषज्ञ डॉ. समीर कपूर, संस्कृतिधर्मी डॉ. सच्चिदानंद जोशी, पद्मश्री विजयदत्त श्रीधर एवं विनय उपाध्याय के अलावा अन्य के व्याख्यान हुए। प्रारंभिक सत्र में बोलते हुए यशवंत व्यास ने कहा कि मशीनें या तकनीक मानव का मुकाबला नहीं कर सकतीं। यह बात जरूर है कि हमारे कई कामों जैसे कि श्रम वाले क्षेत्रों में तकनीक का दखल बढ़ा है।

शब्द बम और मरहम दोनों

'आवाज की दुनिया' विषय पर अपने विचार रखते हुए प्रख्यात रेडियो उद्घोषक कमल शर्मा ने कहा कि शब्द 'बम' का काम भी करते हैं और 'मरहम' का भी। अच्छा बोलना चाहते हैं तो अच्छा सुनना सीखें। शब्द उदास भी करते हैं और शब्दों में वह ताकत भी होती है जो खुशी से भर दे। शब्द ब्रम्ह भी है। अच्छी भाषा के साथ अच्छा बोलने का संस्कार ही उद्घोषक को सफल बनाते हैं। उन्होंने ऑडियो मीडियम में आ रहे बदलावों सहित वाइस प्रोजेक्शन, रेडियो के लिए लेखन आदि विषयों पर विस्तार से बात की। इसी सत्र में संवाद कौशल पर कला समीक्षक विनय उपाध्याय ने कहा कि संसार में भाषा के आने से पूर्व भी ध्वनियां मौजूद थीं। शब्द हमारी स्मृति में ठहर जाते हैं। इसलिए अच्छा संवाद करने के लिए अच्छे शब्द हमारे पास होना जरूरी है। एक अन्य सत्र में 'पत्रकारिता साहित्य एवं संस्कृति' विषय पर पद्मश्री विजयदत्त श्रीधर ने कहा कि भाषा के लिए हमारी निर्भरता तकनीक पर बढ़ना बहुत अच्छा नहीं है। भाषा पत्रकार का प्रमुख औजार है इसलिए भाषा की अच्छी समझ आवश्यक है।

NEWS CLIPPING SERVICE
FROM MCNUJC LIBRARY
PATRIKA 22-08-2025

एआई से मीडिया में प्रतिस्पर्द्धा बढ़ेगी गुणवत्ता में आएगा निखार : व्यास

- एमसीयू सत्रारंभ कार्यक्रम अभ्युदय का दूसरा दिन
- तकनीक मानव का मुकाबला नहीं कर सकतीं, प्रिंट मीडिया को एआई से बहुत फायदा

सत्ता सुधार ■ भोपाल

एआई एक अच्छा साथी या सेवक हो सकता है। इसका मुकाबला ईमानदारी जैसे गुणों से किया जा सकता है। एआई से घबराने की कोई जरूरत नहीं। प्रिंट मीडिया को एआई से बहुत फायदा होगा। एआई के इस दौर में हाइपर लोकल दुनिया बहुत महत्वपूर्ण है, इससे भविष्य में प्रिंट मीडिया में फील्ड रिर्पोटिंग के जॉब्स बढ़ेंगे। उक्त बातें एमसीयू के सत्रारंभ कार्यक्रम अभ्युदय के दूसरे दिन के पहले सत्र में वरिष्ठ पत्रकार और लेखक यशवंत व्यास ने कही। वे बतौर मुख्य वक्ता एआई के दौर में प्रिंट मीडिया विषय पर व्याख्यान दे रहे थे।

विभिन्न सत्रों में वरिष्ठ पत्रकार यशवंत व्यास, वरिष्ठ रेडियो उद्घोषक कमल शर्मा, जनसम्पर्क विशेषज्ञ डॉ. समीर कपूर, संस्कृतिधर्मी डॉ. सच्चिदानंद जोशी, पद्मश्री विजयदत्त श्रीधर एवं वरिष्ठ पत्रकार एवं उद्घोषक विनय उपाध्याय के व्याख्यान हुए। यशवंत व्यास ने कहा कि आधुनिक तकनीक और मानव सभ्यता के विकास में इंटेलिजेंस कोसेंट, फिजिकल कोसेंट, इमोशनल कोसेंट और स्प्रिचुअल कोसेंट जैसे मानवीय गुणों के संदर्भों में कहा कि मशीनें या तकनीक मानव का मुकाबला नहीं कर सकतीं लेकिन अभी भी मानवीय गुण बहुत बुनियादी हैं और एआई जैसी तकनीकें इसका मुकाबला नहीं कर सकती हैं। प्रिंट मीडिया में इन्हीं मानवीय गुणों जैसी प्रीमियम वैल्यू पैदा करनी होगी। सूचनाओं की दुनिया में मीडिया को विश्वसनीयता को बढ़ाना होगा। उन्होंने एमसीयू में पत्रकारिता के इतिहास पर केंद्रित प्रतिष्ठित समाचार पत्रों के ऐतिहासिक घटनाओं के कवरेज के प्रथम पत्रों की गैलरी की प्रशंसा भी की।

इस अवसर पर स्वागत भाषण में कुलगुरू विजय मनोहर तिवारी ने कहा कि पत्रकारिता खासकर प्रिंट मीडिया की पत्रकारिता बहुत विशिष्ट रही है। बहुत से समाचार पत्रों और पत्रिकाओं ने इस क्षेत्र में मानदंड स्थापित किए हैं।

NEWS CLIPPING SERVICE
FROM MCNUJC LIBRARY
SATTA SUDHAR 22-08-2025

पत्रकारिता में सबसे बड़ी पूंजी सच : यशवंत व्यास

● भोपाल / राज न्यूज नेटवर्क

एआई एक अच्छा साथी या सेवक हो सकता है, लेकिन यह कभी मानव का मुकाबला नहीं कर सकता। यह बात वरिष्ठ पत्रकार और लेखक यशवंत व्यास ने माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय (एमसीयू) के सत्रारंभ कार्यक्रम 'अभ्युदय' में गुरुवार को कही। वे 'एआई के दौर में प्रिंट मीडिया' विषय पर संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि पत्रकारिता में सबसे बड़ी पूंजी सच है। इस अवसर पर कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने प्रिंट मीडिया की विशिष्टता और पत्र-पत्रिकाओं की परंपरा पर अपने अनुभव साझा किए। कार्यक्रम में उद्घोषक कमल शर्मा ने 'आवाज की दुनिया' विषय पर कहा कि शब्द बम का भी काम करते हैं और मरहम का भी। वरिष्ठ पत्रकार विनय उपाध्याय ने संवाद कौशल पर विचार रखे। वहीं, पद्मश्री विजयदत्त श्रीधर व इंदिरा गांधी कला केंद्र के सचिव डॉ. सच्चिदानंद जोशी ने पत्रकारिता, भाषा और भारतीय संस्कृति पर और ब्रांड विशेषज्ञ समीर कपूर ने भी अपने विचार रखे। इस अवसर पर 'विकल्प' और 'पहल' पत्रों का विमोचन हुआ व छात्रों को पुरस्कार भी दिए गए।

NEWS CLIPPING SERVICE
FROM MCNUJC LIBRARY
RAJ EXPRESS 22-08-2025

एमसीयू में 'एआइ के दौर में प्रिंट मीडिया की प्रासंगिकता' पर चर्चा

हाइपर लोकल पत्रकारिता से खुलेंगे फील्ड रिपोर्टिंग के नए रास्ते : व्यास

नवदुनिया प्रतिनिधि, भोपाल: माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय (एमसीयू) के सत्रारंभ कार्यक्रम अभ्युदय के दूसरे दिन विभिन्न सत्रों का आयोजन किया गया। वरिष्ठ पत्रकार व लेखक यशवंत व्यास ने कहा कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआइ) मानव का साथी या सेवक हो सकता है, लेकिन इसका मुकाबला ईमानदारी व मानवीय गुणों से ही संभव है। उन्होंने स्पष्ट किया कि एआइ से घबराने की आवश्यकता नहीं है, बल्कि यह प्रिंट मीडिया के लिए लाभकारी साबित होगा।

मुख्य वक्ता यशवंत व्यास ने एआइ के दौर में प्रिंट मीडिया के महत्व पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि हाइपर लोकल पत्रकारिता का महत्व भविष्य में और बढ़ेगा और फील्ड रिपोर्टिंग के रास्ते खुलेंगे। मशीनें इंसान की तरह इंटेलिजेंस, इमोशन और स्प्रिचुअल वैल्यू नहीं रख सकतीं, इसलिए प्रिंट मीडिया को अपनी विश्वसनीयता और मानवीय गुणों को प्रीमियम वैल्यू बनाना होगा। कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने प्रिंट मीडिया की पत्रकारिता विशिष्टता पर प्रकाश डाला। रेडियो उद्घोषक कमल शर्मा ने आवाज की शक्ति पर चर्चा करते हुए अच्छे श्रोता बनने को अच्छे वक्ता बनने की पहली शर्त बताया। कार्यक्रम में पत्रकारिता विभाग के समाचार पत्र विकल्प और जनसंचार विभाग की पत्रिका पहल का विमोचन किया गया। पंडित रामेश्वर दयाल स्मृति पुरस्कार प्रज्ञा और विशाखा को तथा स्व. अंबा प्रसाद स्मृति पुरस्कार प्रतिष्ठा पवार को प्रदान किया गया।

एमसीयू में सत्रारंभ कार्यक्रम 'अभ्युदय' के दूसरे दिन उपस्थित वक्ता। • सौ: आयोजक

पत्रकारिता में लोकमंगल की भावना

पत्रकारिता, साहित्य एवं संस्कृति विषय पर पद्मश्री विजयदत्त श्रीधर ने कहा कि पत्रकारिता में लोकमंगल की भावना और भाषा की गहरी समझ जरूरी है। वहीं, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नई दिल्ली के सचिव डा. सच्चिदानंद जोशी ने कहा कि भारतीय संस्कृति और ज्ञान परंपरा विश्व को प्रभावित कर सकती है। डिजिटल दौर में विज्ञापन और जनसंपर्क की रणनीतियों पर ब्रांड विशेषज्ञ डा. समीर कपूर ने कहा कि डिजिटल क्रांति ने पीआर और विज्ञापन की दुनिया को नए आयाम दिए हैं।

NEWS CLIPPING SERVICE
FROM MCNUJC LIBRARY
NAVADUNIA 22-08-2025

एमसीयू सत्रारंभ कार्यक्रम 'अभ्युदय' का दूसरा दिन

शब्द 'बम' का काम भी करते हैं और 'मरहम' का भी

हरिभूमि न्यूज ▶▶ भोपाल

शब्द 'बम' का काम भी करते हैं और 'मरहम' का भी। अच्छा बोलना चाहते हैं तो अच्छा सुनना सीखिए। शब्द उदास भी करते हैं और शब्दों में वह ताकत भी होती है जो खुशी से भर दे। शब्द ब्रम्ह भी है, जिसकी हम प्राण प्रतिष्ठा करते हैं। अच्छी भाषा के साथ अच्छा बोलने का संस्कार ही उद्घोषक को सफल बनाते हैं। आवाज की दुनिया विषय पर उपरोक्त विचार कहे प्रख्यात रेडियो उद्घोषक कमल शर्मा ने। जो एमसीयू के सत्रारंभ कार्यक्रम 'अभ्युदय' के दूसरे दिन बोल रहे थे।

शब्द की प्राण प्रतिष्ठा वाणी से ही होती है...

उन्होंने कहा कि शब्द की प्राण प्रतिष्ठा वाणी से ही होती है और वह प्रभावशाली हो जाता है। बोलते वक्त व्याकरण का ध्यान रखना जरूरी हो जाता है। उन्होंने ऑडियो मीडियम में आ रहे बदलावों सहित वाइस प्रोजेक्शन, रेडियो के लिए लेखन आदि विषयों पर विस्तार से बात की।

एआई एक अच्छा साथी या सेवक हो सकता है...

वरिष्ठ पत्रकार और लेखक यशवंत व्यास ने कहा कि एआई एक अच्छा साथी या सेवक हो सकता है। इसका मुकाबला ईमानदारी जैसे गुणों से किया जा सकता है। एआई से घबराने की कोई जरूरत नहीं। प्रिंट मीडिया को एआई से बहुत फायदा होगा। एआई के इस दौर में हाइपर लोकल दुनिया बहुत महत्वपूर्ण है, इससे भविष्य में प्रिंट मीडिया में फील्ड रिपोर्टिंग के जॉब्स बढ़ेंगे।

NEWS CLIPPING SERVICE
FROM MCNUJC LIBRARY
HARIBHOOMI 22-08-2025

एमसीयू अभ्युदय के दूसरे दिन एआई और मीडिया पर विशेषज्ञों के विचार

भोपाल। एमसीयू सत्रारंभ कार्यक्रम 'अभ्युदय' के दूसरे दिन वरिष्ठ पत्रकार यशवंत व्यास ने कहा कि एआई से मीडिया में प्रतिस्पर्धा बढ़ेगी, लेकिन गुणवत्ता भी सुधरेगी। उन्होंने बताया कि तकनीक मानव के इमोशनल और स्पिरिचुअल गुणों का मुकाबला नहीं कर सकती। प्रिंट मीडिया को एआई से काफी लाभ मिलेगा और हाइपर लोकल रिपोर्टिंग की मांग बढ़ेगी, जिससे फील्ड रिपोर्टिंग के अवसर बढ़ेंगे।

कार्यक्रम में रेडियो उद्घोषक कमल शर्मा ने शब्दों की ताकत और प्रभाव पर चर्चा की, वहीं संवाद कौशल पर विनय उपाध्याय ने अच्छे संवाद के लिए पढ़ाई और सुनने की अहमियत बताई। पद्मश्री विजयदत्त श्रीधर ने पत्रकारिता में भाषा की भूमिका पर जोर दिया और संस्कृतिविद डॉ. सच्चिदानंद जोशी ने भारतीय संस्कृति की महत्ता बताई।

NEWS CLIPPING SERVICE
FROM MCNUJC LIBRARY
DAINIK NAIDUNIA 22-08-2025

स्वदेश

भोपाल - संस्करण

NEWS CLIPPING SERVICE
FROM MCNUJC LIBRARY

22 Aug 2025

प्रिंट मीडिया को एआई से फायदा, गुणवत्ता में भी होगा सुधार

एमसीयू सत्रारंभ अभ्युदय कार्यक्रम में वरिष्ठ पत्रकार यशवंत व्यास हुए सम्मलित

स्वदेश संवाददाता ■ भोपाल

मीडिया के लिए एआई एक अच्छा साथी हो सकता है। इससे घबराने की कोई जरूरत नहीं है। प्रिंट मीडिया को एआई से बहुत फायदा होगा। एआई के इस दौर में हाइपर लोकल दुनिया बहुत महत्वपूर्ण है। इससे भविष्य में प्रिंट मीडिया में फील्ड रिपोर्टिंग के जॉब्स बढ़ेंगे। उक्त विचार एमसीयू के सत्रारंभ कार्यक्रम अभ्युदय के दूसरे दिन के वरिष्ठ पत्रकार और लेखक यशवंत व्यास ने कही।

उन्होंने कहा कि आधुनिक तकनीक और मानव सभ्यता के विकास में इंटेलिजेंस, फिजिकल, इमोशनल और स्प्रिचुअल कोसेंट जैसे मानवीय गुणों का मशीनें या तकनीक मानव का मुकाबला नहीं कर सकती। यह जरूर है कि हमारे कई कार्य क्षेत्रों में तकनीक का दखल बढ़ा है। बहुत हद तक आईक्यू आधारित काम बढ़ रहा है, लेकिन अभी भी मानवीय गुणों की एआई जैसी तकनीकें मुकाबला नहीं कर सकती हैं।

प्रिंट मीडिया में इन्हीं मानवीय गुणों से प्रीमियम वैल्यू पैदा करनी होगी। उन्होंने एमसीयू में पत्रकारिता के इतिहास पर केंद्रित प्रतिष्ठित समाचार पत्रों के ऐतिहासिक घटनाओं के कवरेज के प्रथम पन्नों की गैलरी की प्रशंसा भी की।

इससे पहले स्वागत भाषण मेंकुलगुरू विजय मनोहर तिवारी ने कहा कि पत्रकारिता में खासकर प्रिंट मीडिया की पत्रकारिता बहुत विशिष्ट रही है। बहुत से समाचार पत्रों और पत्रिकाओं ने इस क्षेत्र में मानदंड स्थापित किए हैं। उन्होंने पत्रकारीय जीवन के अनुभवों को साझा किया और बताया कि किस तरह प्रतिष्ठित पत्रिकाओं ने उनके लेखन में अहम भूमिका का निर्वाह किया है। इस मौके पर पत्रिका पहल का विमोचन हुआ। पत्रकारिता विभाग की छात्राओं प्रज्ञा, विशाखा, प्रतिष्ठा पवार को पुरस्कार दिए गए। विविध सत्रों का संचालन लोकेंद्र सिंह राजपूत, डॉ गरिमा पटेल, विवेक सावरीकर, डॉ. संदीप भट्ट ने तथा आभार डॉ. राखी तिवारी, प्रो. संजय द्विवेदी, डॉ. आरती सारंग तथा डॉ. पवित्र श्रीवास्तव ने किया।

इन वक्ताओं ने भी रखे विचार

» आवाज की दुनिया विषय पर प्रख्यात रेडियो उद्घोषक **कमल शर्मा ने कहा** कि शब्द बम का काम भी करते हैं और मरहम का भी। अच्छा बोलना चाहते हैं तो अच्छा सुनना भी सीखिये। शब्द उदास भी करते हैं और खुशी भी भर दें।

» संवाद कौशल पर कला समीक्षक **विनय उपाध्याय ने कहा** कि संसार में भाषा के आने से पूर्व भी ध्वनियां मौजूद थीं। यही ध्वनि भाषा की मातृभूमि हैं और शब्द उसकी पृष्ठभूमि। शब्द हमारी स्मृति में ठहर जाते हैं। इसलिए अच्छे शब्द हमारे पास होना चाहिए।

» पत्रकारिता साहित्य एवं संस्कृति विषय पर **पद्मश्री विजयदत्त श्रीधर ने कहा** कि भाषा के लिए हमारी निर्भरता तकनीक पर बढ़ना बहुत अच्छा नहीं है। भाषा पत्रकार का प्रमुख औजार है इसलिए मीडिया के लोगों में भाषा की अच्छी समझ आवश्यक है।

» इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नई दिल्ली के सचिव **डॉ. सच्चिदानंद जोशी ने कहा** कि एक भारतीय बतौर हमारी पहली पहचान हमारी संस्कृति है। भारत की ज्ञान परंपरा और संस्कृति बहुत समृद्ध है और यह पूरे विश्व को प्रभावित कर सकती हैं। यह युग मोबाइल का नहीं, बल्कि भारत का युग है।

» डिजिटल दौर में विज्ञापन और जनसंपर्क की रणनीतियों पर ब्रांड **विशेषज्ञ डॉ. समीर कपूर ने** जनसंपर्क का क्षेत्र बहुत विस्तृत हुआ है और इसमें अनेक नए आयाम जुड़े हैं। इस क्षेत्र में आने वालों को बाजार और बदलती तकनीकों, प्रतिस्पर्द्धा की बारीक जानकारियां होना आवश्यक है।